'पत्र' संपादक के नाम

जनवरी 2010 अंक पढ़कर ऐसा लगा जैसे बाबा से ही मुलाकात हुई। बाबा की स्मृतियाँ पत्रिका के प्रत्येक पन्ने पर संचित थी। आत्मा में नर और नारी दोनों के संस्कार होते हैं, यह पढ़कर मुझे बल मिला। वास्तव में यह पत्रिका ज्ञान का अमृत है, इसे प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए।

– साधना शर्मा,
गिरी नगर (हि.प्र.)

दिसंबर 09 अंक में 'पवित्रता' लेख बहुत अच्छा लगा। वास्तव में पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है। गीता में भी लिखा है, काम महाशत्रु है। शिवबाबा ने ब्रह्मा के मुख द्वारा शब्द उच्चारे हैं 'पवित्र बनो, योगी बनो।' पवित्रता वास्तव में मन, वचन, कर्म, संबंध-संपर्क में रहनी अति आवश्यक है। अशान्ति, दुख, क्लेश व अप्राप्ति का कारण अपवित्रता ही है।

– ब्र.कु.सतीश सक्सेना,
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

मैं ज्ञानामृत का नियमित पाठक हूँ। यूँ तो ज़िन्दगी में मैंने बहुत सारी पत्रिकायें पढ़ी पर ज्ञानामृत तो नि:संदेह बेमिसाल है क्योंकि इसका आधार सर्वशक्तिवान की वाणी है। इस पत्रिका से जीवन में अवर्णनीय परिवर्तन आया। दिसंबर 09 में छपा 'अनुभव करो' लेख शिव बाबा की हम बच्चों के प्रति बेइंतहा मोहब्बत की कसक व तड़प का एहसास कराता है। पत्रिका के हर अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है। अगले अंक के बीच वर्षों का फासला लगता है।

– ब्र.कु.रतन कु. दास,
कुमारीकाटा, असम

ज्ञानामृत पत्रिका अमृत-तुल्य साबित हो रही है जिसे पढ़कर, जो जेल नर्क-सी अहसास हो रही थी, आज स्वर्ग-सी प्रतीत हो रही है और मन अक्सर यह गुनगुनाया करता है कि तेरे पास रहने को जी चाहता है, कभी भी न जाने को जी चाहता है।

कई लेख जैसे जुलाई अंक में 'बेहद की वैराग्य वृत्ति' व 'तलाश जो पूरी हो गई', अगस्त अंक में 'बरबादी से आबादी की ओर', सितंबर अंक में 'पुरुषोत्तम संगमयुग में कानून की मर्यादा और महिमा' व 'धर्मनीति और राजनीति का एक स्वर', अक्टूबर अंक में 'श्वेत की शान' तथा दिसंबर अंक में 'बलि किसकी' आदि-आदि पढ़कर मन बहुत ही प्रसन्न हुआ।

– ब्र.कु.रामानुज वर्मा,
सेन्ट्रल जेल, वाराणसी

नि :स्वार्थ भाव ही संगठन की मजबूती का आधार है

बाबा प्यार तुम्हारा

ब्र.कु. घमंडीलाल अग्रवाल, गुड़गाँव

सुंदर फूलों के उपवन-सा
जीवन बना हमारा
मन के आंगन जब से बरसा
बाबा प्यार तुम्हारा।।
क्रोध, लोभ, भय, अहंकार सब
जाने हैं किस ओर गये,
सांसों में संगीत समाया
मिले नित्य उपमान नये।
लगता जैसे खुद के ऊपर
है अधिकार हमारा।
मन के आंगन .....
जीना क्या होता है इसका
अर्थ समझ में आया
दुख की बंजर-सी धरती पर
सुख ने नीड़ बनाया।
ज्ञान आगमन से मुस्काया
यह घर-द्वार हमारा।
मन के आंगन .....
'मुरली' सुनकर हुए हैं दोऊ
कान सार्थक ऐसे,
प्यासे को अमृत की धारा
मिले अचानक जैसे।
संयम और विनय का पुरखा
अब आधार हमारा।
मन के आंगन .....
जो भूले, भटके, अटके हैं
उनको पथ दिखा दो
बुझे-बुझे जो दीप नयन के
ज्योति सब में ला दो।
पूरा विश्व कुटुम्ब एक हो
यही विचार हमारा।
मन के आंगन .....